URMUL KHEJARI SANSTHAN NAGAUR

South Asia pro-Poor livestock Policy Programme

उरम्ल खेजड़ी संस्थान नागौर राजस्थान

Sheep and Goat Based Livelihood Improvement Project

परियोजना का उद्देष्य

- भेड़ एवं बकरी पालन को लेकर पष्पालकों की जानकारी एवं जागरूकता को बढाना एवं उन्नत तरीके से पषपालन को बढाना।
- मृत्यु दर को कम करना।पष्पालन कार्य को केवल घरेलु कार्य न मानकार ऑयवर्धन से जोड़ना।
- टीकाकरण, डीवर्मिंग व पष स्वास्थ्य परामर्ष में ग्राम स्तर पर पषु सखी को तैयार काना। • बकरी व भेड़ पालक में नस्ल सुधार को
- प्राथमिकता से समझ सकेंगे।

परियोजना क्षेत्र

- 7 ग्राम पंचायतों
- 21 गांव
- आधा गांव रेतीली व आधा भाग पठारी
- फसल वर्शा आधारित
- प्रति तीन साल बाद अकाल
- 30 प्रतिषत दलित सम्दाय
- जिनके पास खेती योग्य जमीन न्युन है

PROJECT BASELINE

- 80 प्रतिषत परिवार बकरी पालन से जुड़े हुए है
- बकरी पालन परिवार का एटीएम है
- बकरी की herd-size 1 से 5
- बकरियों का घर बाड़ा नहीं
- बकरियों की मृत्यु दर ज्यादा
- प्रषासन की सक्रियता में कमी
- बकरे को कम उम्र में कम पेसों में बेचना
- वशां ऋतु में बीमारियां
- प्रजनन के बार में जानकारी कम

कार्य करने का नजरिया

- सहभागिता पूर्ण अध्ययन एवं प्रिषक्षण
- उन्नत पषु प्रबंधन के प्रयास।
- पष्पालकों का समूह गठन
- 10 से 20 सदस्य है
- 15 दिन बाद अवलोकन
- प्रति माह प्रषिक्षण
- संदर्भ सामग्री क्षेत्र की परिस्थितियों के अनुसार तैयार की गई
- एक दुसरे से सिखना
- बताने के साथ ही प्रयोग करना एवं जिज्ञासा बढाना

सहभागियों की प्रस्थिति बैस लाईन

- अधिकत्तर परिवारों ने स्वीकारा है कि दो बच्चों के बीच 12 माह से ज्यादा समय का अन्तराल है।
- पिछले साल प्रत्येक घर में मेमूनों की मृत्यु हुई है।
- उन्नत पष् प्रंबधन की जानकारी का अभाव।
- टीकाकरण व डी वर्मिंग के बारे में जानकारी का अभाव।
- बकरी पालक इलाज तब करवाते हैं जब बकरी की हालत गंभीर हो जाती है।
- खीस का गंदा माना जाता है।
- जब बकरी ब्याती है तो ही थोड़े दिन के लिए अतिरिक्त आहार देते है।
- बकरे बेच देते हैं जो उन की सार संभाल नहीं होती है,बकरी पालकों का मुख्य उद्देष्य बकरा नहीं केवल घरेलु उपयोग हेतु दूध प्राप्त करना है।
- सोर्दियों के मौसम में चारे की कमी आ जाती है चारा एकत्रित भी नहीं करते है।

स्वास्थ्य देखभाल

निवारात्मक

- निवारण का महत्व नहीं समझ पाना।
- टीकाकरण व डी वर्मिंग की सेवा के साथ पशुपालकों की मांग बढाना।

उपचारात्मक

- बीमारियों को सही समय पर पहचानना।
- घरेलु उपचारों की उपयुक्तता को समझना।
- बीमारियों के बचाव को और गहराई से समझना।

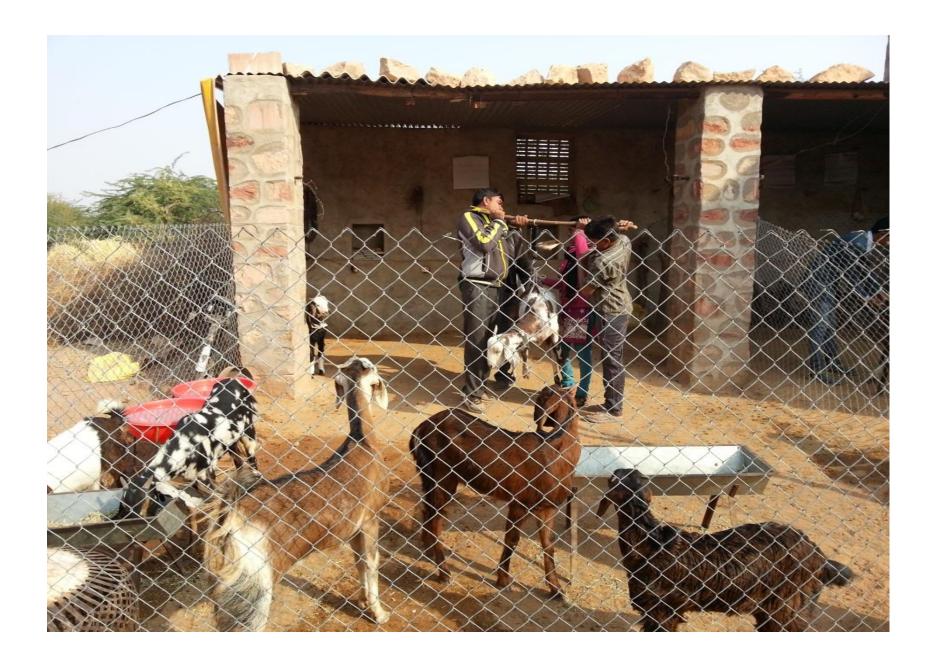
पशु सखी एवं पैरावेट का क्षमतावर्धन

- गांव में रोग निवारण के लिए एक या दो व्यक्तियों का चयन कर क्षमता वर्धन करना।
- पशु सखी, पैरावेट व डॉक्टर्स के साथ बैठक करवाना ,पहचान व ज्डाव करवाना।



कार्यकर्ताओं द्वारा एक अन्य प्रयोग

- कार्यकर्ताओं का क्षमतावर्धन
- पशुपालकों का एक उन्नत तरीका वास्तविक तौर पर मिलता है।



सरकार के साथ जुड़ाव

- ब्लाक स्तर पर वैक्सिन तो उपलब्ध हुई पर स्टाफ उपलब्ध नहीं हुआ।
 पंचायतीराज संस्थाओं का सकारात्मक सहयोग।

Results

- बैठक में सदस्यों की भागीदारी 90 प्रतिषत सदस्यों की भागीदारी।
- ई.टी. के कारण कार्यक्षेत्र में बकरियों की मृत्यु नहीं के बराबर हुई।
- बॅंकरी पालक बकरियों को पहले बाहर बांधते थे अब अधिकत्तर बकरीपालकों न घर बाड़ा बना लिया।
- किसान खेत पाठषाला के सदस्यों ने मिलनरल ब्लाक का उपयोग ष्र किया।
- सर्दी से बँचाव के लिए घर बाड़े की व्यवस्था के साथ घर बाड़े की सफाई दिन में दो बार होती है।
- बचे हुए भोजन को बकरियों को दिया जाने लगा हैं।

Participatory Research and Training

- Multiplicity of IGMP Practices and Various mediums of communication require time-bound agent specific interaction
- Actual inclusion of Socio-economically disadvantaged persons
- Systematic Implementation (PRT) coupled with efficient internal management toward effective outcomes
- Method replicable but not necessarily content
- Explore links with government policies on adult literacy, life skills education and extension

Community-Based Organisations

- Deep knowledge of the Area
- Developing situation specific IGMP content
- Appropriate selection of neighborhoods and Project Participants
- Working through village dynamics
- Opportunity for in-situ development of critical skills
- Gradual inclusion within knowledge networks